ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 185-187**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

छात्राध्यापकों में निराशा एवं शैक्षिक उपलब्धि : सामाजिक एवं लिंग आधारित तुलनात्मक अध्ययन

सालिक हुसैन, 2. डॉ0 राज कुमार झा
शोध अध्येता– शिक्षा संकाय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विवि0, 2. .असि0 प्रोफेसर, ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (TEP), मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-26.08.2025, Revised-07.09.2025, Accepted-14.09.2025 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

***सारांशः** प्रस्तुत शोध–लेख में छात्राध्यापकों के निराशा स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि क्या निराशा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है तथा क्या यह प्रभाव लिंग एवं सामाजिक वर्ग के आधार पर भिन्न होता है। अध्ययन में कटिहार जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 400 छात्राध्यापकों को सम्मिलित किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के आकलन हेतु बी.एड. परीक्षा में प्राप्त अंकों का प्रतिशत आधार बनाया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं ब्त्ए तकनीक का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, किन्तु निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही जातिगत आधार पर भी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर प्राप्त हुआ। अध्ययन यह संकेत करता है कि निराशा की स्थिति में सामाजिक एवं लिंग आधारित कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– निराशा, शैक्षिक उपलब्धि, छात्राध्यापक, शिक्षक शिक्षा, सामाजिक वर्ग, प्रतिस्पर्धा, सार्थक, मानसिक तनाव, असुरक्षा।

1. प्रस्तावना–शैक्षिक उपलब्धि किसी विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता, अध्ययन प्रवृत्ति एवं शैक्षिक वातावरण का प्रतिफल होती है। शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापक भविष्य के राष्ट्रनिर्माता होते हैं। यदि वे मानसिक तनाव, निराशा एवं असुरक्षा से ग्रस्त होंगे, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। वर्तमान समय में बेरोजगारी, प्रतिस्पर्धा एवं सामाजिक दबाव के कारण छात्राध्यापकों में निराशा की भावना तेजी से बढ़ रही है।

निराशा का प्रभाव केवल मानसिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह व्यक्ति की कार्यक्षमता, अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया तथा उपलब्धि स्तर को भी प्रभावित करता है। शैक्षिक उपलब्धि पर निराशा के प्रभाव का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे शिक्षक शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने एवं समाधान विकसित करने में सहायता मिलती है।

2. अध्ययन की समस्या– "छात्राध्यापकों में निराशा एवं शैक्षिक उपलब्धि : सामाजिक एवं लिंग आधारित तुलनात्मक अध्ययन"

3. अध्ययन के उद्देश्य–

1. उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सामान्य, पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के निराशाग्रस्त छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
4. निराशा एवं सामाजिक वर्ग के संयुक्त प्रभाव का विश्लेषण करना।

4. परिकल्पनाएँ–

1. उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं पिछड़ी जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. निराशाग्रस्त पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधकर्ता द्वारा चार शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों से 400 छात्राध्यापकों का चयन किया गया। शैक्षिक उपलब्धि के लिए बी.एड. परीक्षा के प्राप्तांक प्रतिशत का उपयोग किया गया।

सारणी 1 : चयनित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के अनुसार छात्राध्यापकों का विवरण

क्रम सं.	शिक्षक प्रशिक्षण संस्था का नाम	छात्रों की संख्या	छात्राओं की संख्या	कुल
1	कटिहार शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय	40	60	100
2	ख्वाजा शाहिद हुसैन शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय	55	45	100
3	सीमाँचल अल्पसंख्यक बी.एड. महाविद्यालय	54	46	100
4	डी.एस. कॉलेज, कटिहार	51	49	100
कुल		220	180	400

6. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

सारणी 2: उच्च एवं निम्न निराशा वाले छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

निराशा स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
उच्च निराशा	73	52-26	7-13	1-08	398	सार्थक नहीं
निम्न निराशा	327	53-32	7-65			

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

व्याख्याः सारणी के अनुसार उच्च एवं निम्न निराशा वाले छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर बहुत कम पाया गया। ब्ण्त् मान 1.08 होने के कारण यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। अतः निराशा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट नहीं हुआ।

सारणी 3: निराशाग्रस्त छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

थ्लंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
छात्र	41	52.16	7.56		71	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	32	55.23	7.31			

व्याख्याः सारणी से ज्ञात होता है कि निराशाग्रस्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गई। C.R. मान 2.01 होने के कारण यह अंतर 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि निराशा की अवस्था में लिंग शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

सारणी 4 : निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं पिछड़ी जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
सामान्य जाति	25	57-09	7-65	3-76	64	सार्थक
पिछड़ी जाति	41	52-64	7-35			

व्याख्याः प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पिछड़ी जाति के छात्राध्यापकों की तुलना में अधिक पाई गई। C.R. मान 3.76 होने के कारण यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सारणी 5 : निराशाग्रस्त सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
सामान्य जाति	25	57.09	7.65		30	अत्यंत सार्थक
अनुसूचित जाति	07	50.24	6.89			

व्याख्याः उपरोक्त सारणी के अनुसार सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय अंतर पाया गया। C.R. मान 5.91 होने के कारण यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सारणी 6 : निराशाग्रस्त पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	D.F.	निष्कर्ष
पिछड़ी जाति	41	52.64	7.35	2.17	46	सार्थक
अनुसूचित जाति	07	50.24	6.89			

व्याख्याः सारणी से स्पष्ट होता है कि पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। यह परिणाम दर्शाता है कि सामाजिक वर्ग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

7. प्रमुख निष्कर्ष–

1. उच्च एवं निम्न निराशा स्तर वाले छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।
2. निराशाग्रस्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की तुलना में अधिक पाई गई।
3. सामान्य जाति के छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों से अधिक पाई गई।
4. सामाजिक वर्ग एवं लिंग, निराशा की स्थिति में शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए।

8. शैक्षिक निहितार्थ–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
2. सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों को अतिरिक्त शैक्षिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
3. छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास एवं प्रेरणा बढ़ाने हेतु व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।
4. मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव प्रबंधन को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

9. निष्कर्ष– प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि निराशा का प्रभाव केवल मानसिक स्थिति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित कर सकता है। विशेष रूप से लिंग एवं सामाजिक वर्ग जैसे कारक इस प्रभाव को और अधिक जटिल बनाते हैं। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करनी चाहिए।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल–हेमैसम, एम. आई. (1986). विज्ञान उपलब्धि, विज्ञान अधिगम के प्रति अभिवृत्ति, प्रेरणा तथा सऊदी अरब के माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष छात्रों की अपसारी सृजनात्मकता, जिन्हें शैक्षणिक रूप से प्रतिभाशाली अथवा गैर–प्रतिभाशाली के रूप में पहचाना गया। डिसर्टेशन एब्स्ट्रैक्ट्स इंटरनेशनल (ए), 46(10), पृष्ट संख्या 29–85.
2. चौडविक, बी. ए., भार, एच. एम., एवं स्ट्रॉस, जे. (1977). नगरों में भारतीय शिक्षा और शैक्षणिक निष्पादन के सहसंबंध। जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 70(3), पृष्ट संख्या 135–141.
3. गुप्ता, जे. पी. (1978). शैक्षणिक उपलब्धि, लिंग एवं आर्थिक स्तर के संदर्भ में चिंता तथा उपलब्धि–प्रेरणा का अध्ययन। अप्रकाशित पी–एच.डी. (शिक्षा) शोध–प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय। थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृष्ट संख्या. 358.
4. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (1986). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986। नई दिल्ली, भारतः मानव संसाधन विकास मंत्रालय। Retrieved from http://www.ncert.nic.in/oth_anoun/npe86.pdf.
5. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020। नई दिल्ली, भारतः मानव संसाधन विकास मंत्रालय। https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf.
6. कृष्णमूर्ति, एस., एवं साउंडराजा राव, टी. आर. (1969). कोयंबटूर के कुछ उच्च विद्यालयों में उप–शहरी एवं शहरी बच्चों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, 6(1), पृष्ट संख्या 32–39.
7. मेहता, सी. पी. अनुसूचित जाति (एस.सी.) एवं अनुसूचित जनजाति (एस.टी.) के छात्रों की विद्यालयी उपलब्धि पर कुछ मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन।
8. मेहता, पी. उच्च विद्यालय के बालकों में उपलब्धि–प्रेरणा। एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली। इन बुच, एम. बी. (सम्पादक), फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1969), पृष्ट संख्या. 52–55.
9. जस्टिस वर्मा आयोग। (2012). भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित शिक्षक शिक्षा पर उच्चाधिकार प्राप्त आयोग की रिपोर्ट। एम.एच.आर.डी., विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता विभाग। Retrieved from https://www-education-gov-in/sites/upload_files/mhrd/files/documentreports/JVC:20Vol:201.pdf.
10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2006). स्थिति पत्रः विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.ई.आर.टी. Retrieved from https://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/science.pdf.
11. वर्मा, एम. (1985). शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकः उत्तर प्रदेश के जूनियर हाई स्कूल स्तर पर जनजातीय एवं गैर–जनजातीय छात्रों का पार–सांस्कृतिक अध्ययन। पी–एच.डी. (शिक्षा), अवध विश्वविद्यालय। फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, पृष्ट संख्या 866.
12. गिलफोर्ड, जे. पी. (1982). फंडामेंटल स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन। नई दिल्लीः मैकग्रा–हिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड।
13. अग्रवाल, जे. सी. (2007–08). शैक्षिक तकनीकी (पंचम संस्करण)। आगरा–2ः अग्रवाल पब्लिकेशन।
14. दुबे, सुनील (2007). जूनियर हाईस्कूल स्तर पर सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं अभिवृत्ति पर वैयक्तिक अनुदेशन का प्रभाव। अप्रकाशित पी–एच.डी. (शिक्षा) शोध–प्रबंध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
15. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद। (2009). शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाः व्यावसायिक एवं मानवीय शिक्षक की तैयारी की दिशा में। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.टी.ई. Retrieved from https://ncte.gov.in/Website/PDF/NCFTE_2009.pdf.
16. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.ई.आर.टी. Retrieved from https://www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/english/nf2005.pdf .
17. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2006). स्थिति पत्रः विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय फोकस समूह। नई दिल्ली, भारतः एन.सी.ई.आर.टी. Retrieved from https://www.ncert.nic.in/new_ncert/ncert/rightside/links/pdf/focus_group/science.pdf.

*****